WELLAND GOULDSMITH SCHOOL
CLASS : 8
SUBJECT : 2nd LANGUAGE HINDI
CHAPTER : 8

मुरझाया फूल

सार :

प्रस्तुत कविता ' मुरझाया फूल' की कवयित्री ' सुश्री महादेवी वर्मा जी' है | इस कविता के द्वारा उन्होंने हमें यह समझाने की कोशिश की है कि इस संसार में सब का नाता- रिश्ता स्वार्थ पर ही टिका है | जब तक संसार में हमारा एक दूसरे से स्वार्थ निकलता है; तभी तक हम एक दूसरे को पहचानते हैं, सम्मान देते हैं | मतलब निकल जाने के बाद कोई एक दूसरे को पहचानता तक नहीं है |

कवयित्री यही बात फूलों के माध्यम से हमें समझाना चाहती हैं | वह एक सूखे हुए फूल से बात कर रही हैं | आज वह सूखा हुआ फूल दुखी है वह धरती पर मुरझाया पड़ा है और लोग अब उसका सम्मान नहीं कर रहे | कवयित्री उसे समझाते हुए कहती हैं कि जब तू अपने शैशव काल में था तब यह धीमी हवा तुझे अपनी गोद में झुलाया करती थी | जब तू पूरी तरह खिल कर एक सुंदर कोमल पुष्प बन गया तो लोभी भ्रमर तुम्हारे चारों तरफ मंडराने लगे |

चंद्रमा की शीतल किरणें भी तुझे हंसाती- दुलारती रहती थी | रात भी तुझ पर अपनी मोती रूपी ओस की बूंदें लुटाती रहती थी | जो भंवरे दिन में मधु के लोभ में तेरे चारों तरफ मंडराया करते थे; वे ही रात को मीठी लोरियां सुना कर तुझे नींद में सुला देते थे | माली भी बड़ी कोशिशों से तुम्हारा ख्याल रखता था तथा तुझे आनंद से पूर्ण कर देता था | हे फूल ! उस समय सभी तेरे इर्द-गिर्द मंडराते रहते थे क्योंकि वहां इन सब का कोई ना कोई मतलब जरूर होता था |

उन दिनों तू भी इतना इतराता रहता था, घमंड में रहता था | तब क्या तुझे अंत का यह दृश्य ध्यान में आया था ? अब आज तू मुरझाए सूखे हाल में यहां धरती पर पड़ा है | आज तुम्हारे पास ना तो सुंदरता है और ना ही सुगंधि है ; मुरझा जाने के कारण तुम्हारा चेहरा भी उतरा हुआ है |

एक समय था जब भ्रमर तुम्हारे इर्द-गिर्द मंडराया करते थे परंतु आज वे भी तुम्हारे पास भी नहीं आते | जो रात तुझ पर ओस की बूंदे लुटाती थी और प्रातःकाल तुम्हारे खिलने का इंतजार करता था; वह प्रातःकाल भी आज तुम पर अपना स्नेह नहीं लुटाता | जिस हवा ने अपनी गोद में तुम्हें झुलाया था; आज उसी ने एक तीव्र झोंके से तुम्हें धरती पर सुला दिया है |

हे सुमन ! एक समय था जब तुमने अपनी खुशबू और सुंदरता से सबको बहुत प्रसन्न किया; परंतु दुर्भाग्य की बात है कि आज तुम्हारे बुरे समय में कोई भी तुम्हारे साथ नहीं है | हे फूल ! तुम दुनिया के इस व्यवहार पर दुखी मत होना | यहां संसार के सभी लोग बड़े ही स्वार्थी हैं तथा सभी एक- दूसरे से ऐसा ही व्यवहार करते हैं |

हे फूल ! तुमने हमेशा सबको प्रसन्न रखने की ही कोशिश की है | तुमने हमेशा अपना सब कुछ सब को दान कर दिया फिर भी तुम प्रसन्न ही रहे | इतना होने पर भी यदि संसार तुम्हारी दानशीलता को नहीं समझ पाया तो फिर हम जैसे मनुष्यों की फिक्र और परवाह कौन करेगा ?

इस प्रकार कवयित्री ने इस कविता में हमें संसार की क्षणभंगुरता के बारे में समझाया है तथा वे यह भी कहना चाहती हैं कि हमें कभी भी किसी भी बात का गर्व नहीं करना चाहिए |

WORKSHEET

Q 1) निम्न शब्दों के अर्थ लिखिए :

a) निस्सार
b) व्यथित
c) शैशव
d) संपदा
e) मंजु

Q 2) निम्न शब्दों से वाक्य बनाएं :

a) हास्य
b) सुमन
c) धरा
d) शुष्क
e) सर्वस्व

Q 3) निम्न प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

a) फूल बचपन में किस की गोद में खेला करता था ?
b) भंवरे फूल पर आकर क्यों मंडराते हैं ?
c) फूलों पर रात किन मोतियों की संपदा वारती है ?
d) फूल कब अठखेलियां किया करता था ?
e) कवयित्री फूल को किस बात की प्रेरणा देती हैं ?
f) पूर्ण खिल जाने पर फूल का रूप कैसा हो जाता है ?
g) ईश्वर ने संसार को कैसा बनाया है ?
h) फूल क्या दान कर देता है ?
i) मुरझाए फूल के साथ किस प्रकार का व्यवहार किया जाता है ?
j) विलोम शब्द लिखें :-- शुष्क, दानी

Q 4) कवयित्री मुरझाए फूल को देखकर क्या निष्कर्ष निकालती हैं ?